भारतीय महिलाएं एवं पर्यावरण संरक्षण

किसी देश की संस्कृति तथा सभ्यता का विकास उसके पर्यावरण पर निर्भर है। आज हम सबकी पर्यावरण को संरक्षित एवं संतुलित बनाये रखने की जिम्मेदारी है। इस वैज्ञानिक युग में विकास के नाम पर दिन–प्रतिदिन प्रदूषित हो रहे पर्यावरण के प्रति हम सब को सचेत होना है। पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान सराहनीय हो सकता है अगर वे इसके प्रति जागरूक हो जायें अभी हाल ही में एक स्वास्थ्य एवं समाज सुरक्षा विभाग की नर्सिंग अधिकारी, बारबरा एफ वैलेर ने अपने भाषण में कहा कि महिलाएं राष्ट्र की प्रगति का एक अभिन्न अंग हैं। परिवार कल्याण के अभियान को सफल बनाना महिलाओं के हाथ में है। निरन्तर बढ़ती आबादी पर्यावरण विनाश का मूल आधार है तो महिलाएं पूरे परिवार में जागरूकता ला सकती है। जैसा कि चार्ल्स डी–मेल्वा के अनुसार 'जब' आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तब एक व्यक्ति शिक्षित होता है परन्तु जब आप महिला को शिक्षित करते हैं तब एक परिवार शिक्षित होता है। अतः बढ़ती हुई बाबादी के साथ दूसरी जटिल समस्याएं जैसे आवास व ईंधन की कमी एवं प्रकृति के संचित स्रोतों का हनन आदि भी पर्यावरण के असंतुलन का कारण है। जिस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण पाना जरूरी है। उसी प्रकार बढ़ती हुई ऊर्जा के उपयोग पर नियनत्रण करना जरूरी है। ग्रामीण महिलाओं के ईंधन का एक मात्र साधन है लकड़ी। जैसे कि एक मनुष्य को औसतन प्रतिदिन एक किलो ईंधन की आवश्यकता होती है, इसे हम अनुमान लगा सकते हैं कि कितने वृक्ष कुछ ही समय में जल कर राख हो जायेंगे और तब ईंधन की समस्या का समाधान कैसे होगा ? इसी प्रकार शिक्षा संस्थाओं में कागज की समस्या भी आ सकती है। अतः महिलाएं जंगलों में वृक्षों की महत्ता को समझे और इनको नाश होने से बचाये। महाभारत में भी कहा गया है कि जो वृक्षों का नाश करता है व नदियों को दूषित करता है वह आत्महत्या करता है। वृक्ष, हमारे देश की सम्पदा हैं–**तरु देवो भ़वः**। जो

वृक्ष, फूल, फल और पत्तों के भार को उठाये हैं, जो दूसरों की सेवा करते आये हैं उनको नमस्कार। गौतम सिद्धार्थ को भी ज्ञान वृक्ष के नीचे प्राप्त हुआ था। अतः इस धरती पर वृक्षों को पनपने देना है और परिवार में प्रत्येक व्यक्ति को वृक्ष लगाने की भावना को जाग्रत करना है वरन् इस नग्न धरती की पानी सोखने की क्षमता कम हो जायेगी और वृक्षों का पनपना भी दूभर हो जायेगा। आज जो हम रेगिस्तान देख रहे हैं वे इस प्रकृति की देन न होकर मनुष्य की ही देन हैं। अगर ये इसी प्रकार फैलते गये तो अकाल की स्थिति और भयंकर हो जायेगी।

पौराणिक युग से भारतीय महिलाओं के प्रकृति प्रेम का एक अनूठा इतिहास रहा है।

शकुन्तला, प्रियंवदा और अनुसूया छोटी-छोटी गगरियां लिए पेड़ों को सींचा करती थी। एक आत्मिक आनन्द मिलता था उन्हें। अपनी इस क्रिया में सब कुछ भूल जाती थी वे। वृक्ष और मन दोनों शुद्ध थे। प्रदूषण जैसे कोई समस्या नहीं थी पर शकुन्तला और उसकी सखियों को पता था कि वृक्ष हरियाली के अमृत हैं और जीवन के उत्तम स्रोत हैं।

पशुपतिनाथ की पत्नी पार्वती तो स्वयं प्रकृति की पुत्री है। पर्वत की पुत्री के नाते पर्वत पर उगे वनों से प्यार होना तो स्वाभाविक है। अपने हाथ से लगाये गये देवदार के वृक्ष को यदि वे अपना सबसे प्रिय पात्र मानें तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

वृक्ष के लिए जीवन का बलिदान भारतीय उत्सर्ग परम्परा का एक ऐसा अनूठा अध्याय है जिस पर सहज ही गर्व किया जा सकता है। इस अध्याय के जगमगाते नारी-नगीनों में जो नाम श्रद्धा से लिए जाते हैं वे हैं- करमा, गौरा, अमृता देवी, दामी और चीमा। मृत्यु को अंगीकार करके ये सभी भारतीय नारियां हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गई।

बिश्नोई समाज की वीरांगनाओं ने पर्यावरण रक्षा का एक इतिहास बनाया है - इतिहास की यह रचना कुर्बानी के पन्नों पर की गई है। इतिहास न करमा को भूल सकता है और न गोरा को। उनका दोष तो सिर्फ यही था कि वे प्रकृति के पुत्रों, पेड़ों को बचाना चाहती थीं पर जब वृक्ष-शत्रु नहीं माने तो उन्होंने समर्पण करने से कहीं ज्यादा अच्छा मरने को पसंद किया। जोधपुर राज्य का तिलासणी गांव आज भी गवाही देने को तैयार है कि यहां प्रकृति की रक्षा में प्राणों की आहुति दी गई थी। श्रीमती खींवणी खोखर और नंतु नीणा का बलिदान अकारण नहीं जा सकता। वह प्रेरणा-पुंज बना रहेगा। शताब्दियां नमन करती रहेंगी ऐसे बलिदान को।

खेजड़ली बलिदान ने सर्वोपरि नाम आता है अमृतादेवी का। अमृतादेवी एक प्रतीक है महिलाओं के अपूर्व बलिदान की, पर्यावरण के प्रति प्रेम की, और धरती माता के प्रति अटूट अनुराग और आस्था की। 262 वर्ष पुरानी यह घटना आज भी लोगों में रक्त की गर्मी का संचार करती है। यह एक ऐसी घटना है जो अपने आप में सृष्टि के सम्मुख एक अनूठा प्रेरणादायक उदाहरण है।

पर्यावरण की रक्षा को महिलाओं ने केवल जरूरत नहीं समझा वरन् उसे तो धार्मिक अनुष्ठान की तरह माना है। 'चिपको' और 'अप्पिको' आन्दोलन में भी भारतीय महिलाओं ने पूंजीवादी व्यवस्था, शासन–तंत्र और समाज के स्वार्थी ठेकेदारों के सामने जो आदर्श प्रस्तुत किया है, वह अपने आप में अनूठा है। जब भी कोई पेड़ काटने आता है महिलाएं उस पेड़ को घेर कर उससे चिपक जाती हैं। अब चलाओ अपनी कुल्हाड़ी। पेड़ को काटने से पहले नारियों का खून बिखरेगा। धरती लाल होगी तभी कोई पेड़ गिर पाएगा। हजारों, लाखों पेड़ों की रक्षा के लिए यह विरोध अहिंसक है जिसके सामने हिंसा को झुकना पड़ता है।

आज भी भारतीय महिलाएं इस पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति को भूली नहीं हैं परंतु और जोश–खरोश से जुटी हुई हैं। हमें श्रीमती गौरी देवी (टिहरी गढ़वाल), रुख भाईला (बांसवाड़ा राजस्थान) मेधा पाटेकर व मेनका गांधी का नाम भी इसी कड़ी में जोड़ना होगा जो इसी प्रयोजन में निरन्तर जुटी हुई हैं।

वर्तमान में जिस प्रकार महिलाएं समाज कल्याण में सक्रिय भूमिका अदा कर सकती हैं। उसी प्रकार ऊर्जा संकट से गुजर रहे भारत में ईंधन समस्या के समाधान में सराहनीय योगदान दे सकती हैं। जैव गैसें व धूंआरहित चूल्हे को व्यापक रूप से प्रयोग में लेने से न केवल ईंधन की समस्या हल होगी बल्कि कूड़े करकट व फसलों के अवशेषों व पशुओं के अवशेषों का भी प्रयोग हो सकेगा। इनके अलावा सौर ऊर्जा ईंधन का एक निरन्तर स्रोत हो सकता है। भारत जैसे देश में, जहां पूरे वर्ष सौर ऊर्जा का उपयोग में लिया जा सकता है आजकल सौर चूल्हा, सौर प्रेशर कुकर, पंखे व ट्यूब लाईट आदि उपकरणों में सौर ऊर्जा का प्रयोग किया जा रहा है। यहां तक कि सौर फोटो वॉल्ट से दूरदर्शन यन्त्र भी चलने लगे हैं। इतना ही नहीं वैज्ञानिक सौर ऊर्जा का प्रयोग वाहनों में पेट्रोल व डीजल की जगह करने में निरन्तर जुटे हुए हैं।

अतः महिलाएं यदि पर्यावरण के प्रति सचेत होती हैं तो पूरा समाज सचेत होता है और पूरे देश में चेतना की लहर जाग्रत होती है। इस प्रकार एक निष्ठावान एवं सक्रिय महिला कितना काम कर सकती है अगर वह पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं चेतनाशील हो जाये। आज आवश्यकता है प्रत्येक व्यक्ति के 'पर्यावरण संरक्षण' के प्रति जागरूक होने की वरना इसका परिणाम बड़ा भयंकर होगा।

❑❑